भारतीय अर्थव्यवस्था के सन्दर्भ में: भय भूख और भ्रष्टाचार

डॉ० आनन्द कुमार पाण्डेय[1]

भारत एक ऐसा देश है जहाँ समस्त समुदाय एवं जाति के लोग आपस में बड़े मन मिलाव के साथ अपने जीवन की कार्य शैली में जीते हैं। गांधी–नेहरू के इस देश में लोग एक दुसरे के सुख–दुःख, प्यार– दुलार, सदभाव–सदाचार न्याय एवं परिपक्वता युक्त व्यवहार का एक ऐसा मिसाल कायम किये हैं जो पूरी दुनियां में कही नहीं है। विदेशी यहां की समस्त विद्याओं का अनुकरण करते है तथा यहां की संस्कृति एवं सभ्यता का गुणगान भी चारों दिशाओं में व्याप्त है।

ऐसे अनेक गुणों के बावजूद भी हमारे देश में पिछले दो दशकों से भ्रष्टाचार की एक निकम्मी नींव डाली जा चुकी है, यहां पर वर्तमान में प्रत्येक क्षेत्र विकास तो कर रहे है, किन्तु ऐसा कोई क्षेत्र बाकी नही है जो भ्रष्टाचार की लपेट में न जल रहा हो। पूरी सार्वाजनिक व्यवस्था पूर्णरूप से असफल होती जा रही है और लगातार घाटे को दर्शाया जा रहा है, कही न कही इस व्यवस्था में बैठे लोगों को पूर्ण रूपेण कमी है, जो अपने कार्यों व देश हित को छोड़कर स्वयं के हित व विकास की प्रेरण में बँध गये हैं। जिसके कारण देश में गरीबी, बेरोजगारी, दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है।

देश हित को छोड़कर लोगों का झुकाव स्वयं हित की तरफ हो गया है। लोगों को सही कार्य करने में कही न कही भय लग रहा है। क्योंकि भारतीय राजनीति, अर्थव्यवस्था को लुटने के अलावां और कुछ नही करती है बस उसके लोगों का एक लक्ष्य इतना लुटो की आने वाले दिनों में मेरे बराबर पैसे वाला और कोई दिखाई न दें। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण 2004 के बाद बनी केन्द्र सरकार है, जिसने यह सिद्ध कर दिया कि 1951 से लेकर अब तक की सबसे अधिक भ्रष्टाचार वाली सरकार है जिसमें प्रत्येक बड़े स्तर के नेता व मंत्री भ्रष्टाचार के मामले में देश को पूर्ण रूप से बर्बाद कर रहे है। जिसको हमारे देश का प्रत्येक नागरिक जानता है, फिर भी हम उन्ही को मत देते है ऐसा क्यों?

इससे यह साफ प्रतीत होता है कि हम मत भी भय के कारण मजबुरी में उन्ही को दे रहे है जो स्वयं भ्रष्ट है व भष्टाचार को क्या दूर करेगा इन्ही कारण दिन प्रतिदिन हमारे देश में कोई रोजगार सम्बन्धी योजना का सूत्रपात नही हो पा रहा है जिसके कारण हमारे यहां भूख भी अर्थात लोगों को खाने के लिए आनाज का भी देश में जनसंख्या की दृष्टि से कम उत्पादन का प्रकोप जारी है। देश में 18% लोग आज भी बिना भोजन के सोते है और गरीबी की मात्रा जनसंख्या की दृष्टि से बढ़ी है जहां तक हमारा अपना तर्क यह है कि देश में राजनीतिक तन्त्र पूर्ण रूप से भ्रष्टाचार के शिकन्जे में फस चुका है।

वर्तमान में शायद ही कोई सरकारी कार्यालय हो जहां बिना सुविधा शुल्क के

[1] प्रवक्ता अर्थशास्त्र, ज्ञानदायिनी महिला महाविद्यालय, परमपुर, अकेलवां, वाराणसी

कार्यो को पुरा किया जा रहा हो। एक सही अधिकारी को इतना परेशान किया जाता है कि उसमें सही कार्यों के प्रति हीन भावना उत्पन्न होने लगती है।

आर्मी को छोड़कर अन्य विभाग की बात करना एक बेवजह एवं व्यर्थ की बात करने के समान होता है। क्या लोगों के अन्दर देश भक्ति की भावना का अन्त हो चुका है या लोग देश को महत्व देना ही भुल गये है, अगर देश नही तो नागरिक की कल्पना नही की जा सकती है। यदि व्यवस्था ऐसे गति से चलती रही तो क्या हमारे देश का विकास सम्भव होगा, जरूरत है हम पूरे देश वासीओं को देश में फैली बुराइयों को दूर करने के लिए एक होकार सफल प्रयास करना होगा तभी हम भय मुख और भ्रष्टाचार पर नियंत्रण करने में सफल होगें। प्रत्येक स्तर पर भ्रष्टाचार के खिलाफ जंग होनी चाहिये देश में संसाधनों का अभाव नही है परन्तु लोगों की मानसिकता में सुधार तभी होगा जब लोगों में पेट भरने की बात हो पेटी में रखने की नही?

प्रत्येक व्यक्ति यदि अपने अन्दर झाकन शुरू करे व गलत कार्य न करने की प्रेरणा स्वयं से ले तथा स्वच्छ ईमानदार व नेक पुरूष बनने की कोशिश करे व बुराइयों को त्याग दे, तभी देश का नागरिक कहलाने योग्य होगें, जिसमें हम गांधी, नेहरू, पटेल, भगत सिंह, सुख देव, राज गुरू, बोष आदि के सपनों को साकार कर एक आदर्श भारत का निर्माण कर सकते है। जो पूर्ण रूप से समाज वाद पर आधारित होगा जिसमें न कोई ऊचां न कोई निचा होगा, वहां सभी समान होगें, जिसमें न किसी जाति या धर्म का बढ़ावा नही बल्कि एक सन्तुलीत भारत होगा, जहां राम राज्य की कल्पना होगी। गांधी व कार्ल माक्स दोनों विकास के उसी मन्दिर पर पहुचना चाहते थे जो शोषण से मुक्त हो किन्तु रास्ते अलग–अलग थे।

गांधी हृदय परिर्वतन करके देश में एक कान्ति लाना चाहते थे परन्तु कार्ल माक्स खुनी क्रान्ति चाहता था अर्थात अपना हक मांगो, यदि नही मिलता है तो सर कलम करके उसे पाने की कोशिश करो। किन्तु किसी समस्या का समाधान खुन खराबा नही होता, खुन खराबे से केवल द्वेष फैलता है एक दुसरे को नष्ट करने के लिए ही प्रेरित रहते है जहां विकास की कल्पना सम्भव नही है इसी लिए गांधी हृदय परिर्वतन लाना चाहते थे जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण उगंली मार डाकू से बाल्मिक जैसे महान तपस्वी का रूप धारण करना।

विकास तभी सम्भव है जब देश का प्रत्येक नागरिक अपने कार्यों के प्रति स्वस्थ हो तथा किसी के हिस्से को स्वयं न लेना चाहते हो तथा जहां किसी भी प्राणि में ऊच–निच का भय न हो जहां सभी को दो वक्त की रोटी आसानी से प्राप्त हो वह अपराध जैसे तत्व का नाम व निशान न हो ऐसे देश की कल्पना ही लेखक का एक मान लक्ष्य है हम 1951 से लगातार योजनाओं के माध्यम से विकास कर रहे हैं, किन्तु एक भी बार हमने लक्ष्य को पाया नही। इसका एक मात्र कारण है भ्रष्टाचार जो हमारे समाज को दिमक की तरह खा रहा है, इस पर हमें एक सार्थक प्रयास करना होगा जो सभी देश वासीयों से आशा की जाती है, तभी हम एक भय मुक्त व भ्रष्टाचार मुक्त व सभी को आजीविका युक्त आर्दश भारत की ओर ले जाने में सार्थक होगें।

स्रोत

1. योजना–2012, 2. समाचार पत्र, 3. इकोनामिक्स 2013